B.R. College of Higher Edu.
P Tech. Deoband (SRE)

Assistant professor -
Parveen Raj

B.Ed IInd Year

Subject - Knowledge, Language and curriculum

ज्ञान के अन्य प्रकार

⇒ अधिकारात्मक ज्ञान

⇒ संवेदी ज्ञान

⇒ क्रियात्मक ज्ञान

⇒ प्रदर्शित ज्ञान

⇒ सहज बोध अथवा अन्त: प्रज्ञा

1. अधिकारात्मक ज्ञान :- हमारे ज्ञान का अधिकतर भाग तर्क पर आधारित नही होता है, हम पहले से सिद्ध किये गये कुछ सिद्धान्तो द्वारा ज्ञान प्राप्त करते है। जैसे- पृथ्वी सूर्य के चारो ओर चक्कर लगाती है। इस प्रकार यह सिद्ध भी है और शिक्षको के माध्यम से भी प्रदान किया जाता है इसलिए किसी अधिकारी के द्वारा ~~दि~~ दिया गया ज्ञान अधिकारात्मक ज्ञान कहलाता है।

2. संवेदी ज्ञान :- वस्तुओ के अस्तित्व को अपने संवेगो से प्राप्त करते है। इसलिए इसे संवेदी ज्ञान कहा जाता है।

P.T.O.

Scanned with CamScanner

3. क्रियात्मक ज्ञान :- कर्म-2 हमारे निष्कर्ष अनुभवों पर आधारित होते हैं। इस प्रकार का ज्ञान प्रयोजनवाद के दर्शन पर आधारित है। यह ज्ञान व्यक्ति के अनुभव, प्रयोग, निरीक्षण के आधार पर होता है और यह व्यक्तिगत होता है।

4. प्रदर्शित ज्ञान :- मानव मस्तिष्क यद्यपि दो विचारों में तुरन्त ही सहमति या असहमति प्रकट करने में असमर्थ होता है तो उस समय वह परोक्ष रूप से उन विचारों में एक-दूसरे के साथ या अन्य के साथ तुलना करके इसमें सहमति स्थापित कर सकता है। इस प्रकार अन्य विचारों के हस्तक्षेप से प्राप्त किया गया ज्ञान तर्कपूर्ण या प्रदर्शित ज्ञान कहलाता है।

5. सहजबोध अथवा अन्तःप्रज्ञा :- सहज ज्ञान या बोध होता है। जब व्यक्ति अपने आप ज्ञान का अनुभव प्राप्त करता है। जैसे - आसमान नीला है। वह देखने से पता चला आसमान नीला है। इसलिए अपने आप किये गये अनुभव जिसमें व्यक्ति स्वयं साक्षी होता है। यह ज्ञान सहज बोध या अन्तःप्रज्ञा कहलाता है।

P.T.O.

Scanned with CamScanner

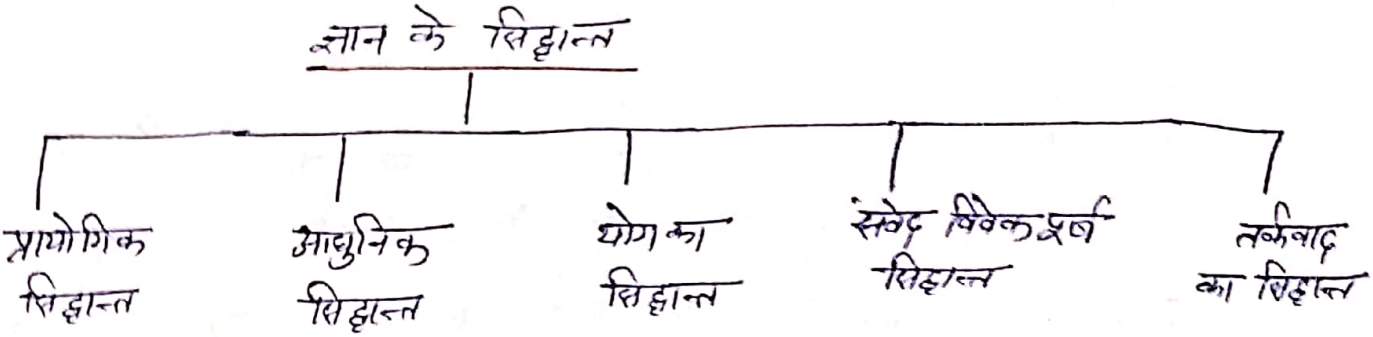

1. प्रायोगिक सिद्धान्त :- यह सिद्धान्त प्रयोगो पर आधारित है। नये-2 प्रयोगो से ही नये-2 ज्ञान प्राप्त होते है। इसलिए यह वर्तमान (आधुनिक) समय मे यह प्रायोगिक रूप मे है।

2. आधुनिक सिद्धान्त :- आधुनिक सिद्धान्त वह सिद्धान्त है, जो ज्ञान को प्राप्त करने मे इन्द्रियो के सहयोग पर बल देता है। यह केवल तथ्य का ज्ञान है और केवल तथ्यो के पारूप और क्रमबद्ध संगठन का ज्ञान है।

3. योग का सिद्धान्त :- भारतीय विचारको के प्रतिनिधि के रूप मे पतंजलि का योग विश्व के दार्शनिक कार्यो मे सबसे अधिक प्रमुख है। मानव शरीर एवं मन ऐसे तत्वो के बने है। जो उत्तेजना के स्रोत बनते है। मनुष्य अपनी ज्ञानेंद्रियो व इन्द्रियो के माध्यम से ज्ञान प्राप्त करता है।

P.T.O.

Scanned with CamScanner

4. संवेद विवेकपूर्ण सिद्धान्त :- अरस्तु ने पूर्ण तर्कवाद को स्वीकार नहीं किया यद्यपि उनका मानना था कि चेतना एवं तर्क ज्ञान के निर्माण मे अवश्यक रूप से सहयोगी है। चेतन सामग्री की क्षमता को तर्क के द्वारा वास्तविक बनाया जाता है और इस तरह हमारे पास विचारो, तथ्यो सिद्धान्तो एवं ज्ञान प्रणाली का व्यापक स्वरूप होता है।

5. तर्कवाद का सिद्धान्त :- तर्क ही ज्ञान का एकमात्र स्रोत है। इन्द्रियो से केवल कच्चा माल प्रदान/ या अनुभव किया जाता है। जिसको आकार देने का कार्य तर्क के द्वारा ही किया जाता है।

जो व्यक्ति बुद्धिवादी होता है, वही तर्कशील भी होता है और वही ज्ञानी भी होता है।

विज्ञान हमे तर्कवादी बनाता है। इसलिए आधुनिक समय तर्कवादी बनने से ही है। वही ज्ञान प्राप्त करने का उचित साधन भी माना गया है।

" जो तर्क नही करता वो धर्मांध है। जो तर्क नही कर सकता वो मूर्ख है। जो तर्क करने का साहस नही कर सकता वो गुलाम है। ——— Dr. P. Raj

इसलिए जो तर्क करता है। वह बुद्धिमान होता है।

Parveen Raj

Scanned with CamScanner